International Journal of Applied Research 2020; 6(8): 139-142

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(8): 139-142
www.allresearchjournal.com
Received: 14-06-2020
Accepted: 19-07-2020

डॉ. मंजु वमा
एसो. प्रोफे., हिन्दी विभाग,
एस.आर.डी.ए.के.पी.जी. कॉलेज,
हाथरस, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. मंजु वमा
एसो. प्रोफे., हिन्दी विभाग,
एस.आर.डी.ए.के.पी.जी. कॉलेज,
हाथरस, उत्तर प्रदेश, भारत

कामायनी का प्राकृतिक सौंदर्य

डॉ. मंजु वर्मा

प्रस्तावना

जयशंकर 'प्रसाद' आधुनिक हिन्दी के सर्वोत्कृष्ट साहित्य स्रष्टा माने जाते हैं। प्रसाद की प्रतिभा सूर तुलसी और कबीर की अनुभवपुष्ट और विराट प्रतिभा से भिन्न कल्पनाप्रवण और भानुकतामय सीमित और सुकुमार प्रतिभा है।

छायावाद के उन्नायक महाकवि जयशंकर प्रसाद के मानव सभ्यता के विकास के अभिसूचक 'कामायनी' में प्राकृतिक वैभव से सम्पन्न एवं प्रकृति के चित्रण को पर्याप्त प्रमुखता प्राप्त हुई है। 'हिमगिरि के उत्तुङ्ग शिखर के उत्स से प्रस्रवित कामायनी की कथा का प्रवाह उद्दाम वेग से प्रवाहित होता हुआ प्रथम सारस्वत नगर की समतल भूमि को रस स्निग्ध करता है तत्पश्चात् अन्तिम परिणति के समय कैलाश पर आनन्द अम्बु निधि में पर्यवसित हो जाता है। कामायनी के उषा, संध्या, दिवस, रात्रि, सूर्य, चन्द्रमा, मेघ, आकाश और वन पर्वत आदि के अनेक चित्र हृदय को आह्लादित करते हैं। अंत में तो हृदय का आन्नद प्राकृतिक सौंदर्य से उत्पन्न आनंद से समन्वित होकर एक परम आनन्द की सृष्टि कर देता है।

प्रसाद के साहित्य में प्रकृति के विभिन्न रूपों में मानवीकरण की प्रवृत्ति ही दृष्टिगोचर होती है। प्रसाद जी प्रकृति के अनन्य प्रेमी रहे हैं। लेकिन प्रसाद पंत की भांति मूलतः प्रकृति के कवि नहीं हैं। उनकी प्रकृति मानव के लिए है, इसलिए पंत की भांति प्रकृति के स्वतन्त्र चित्र उनमें अधिक नहीं हैं। साथ ही वर्डसवर्थ की भाँति प्रकृति का प्रत्येक कण उन्हें प्रिय नहीं है। केवल सुन्दर रूप ही उसका उन्हें आकर्षित करता है।

प्रारम्भिक कविताओं में प्रकृति के प्रति "प्रसाद" के दो दृष्टिकोण सामने आते है – एक तो प्रेम का और जिज्ञासा का। एक का संबंध हृदय से है और दूसरे का मस्तिष्क से। प्रेम की दृष्टि से वह प्रकृ ति के सुंदर चित्र प्रस्तुत करते हैं और जिज्ञासा में उसके सौंदर्य में कौन छिपा है, आदि प्रश्न करते हैं। प्रारंभिक काल के प्रकृति–चित्रों में वर्णन का प्राधान्य और सजीवता की कमी सी दिखाई देती है लेकिन आगे बढ़ने पर जैसे–जैसे प्रकृति का सजीव रूप उनके मानस में निखरता गया, वह उसके रूप को भी सजीव बनाते गये । "कानन कुसुम" तक आते आते वे प्रकृति और मानव को एकरूप में देखने लगते हैं। उनके लिए दोनों सजीव है, दोनों हंसते मुस्कुराते है, दोनों के पीछे कोई विराट सत्ता है। "कान कुसुम" के बाद प्रेम पथिक, करुणालय और "महाराणा का महत्व" आदि तक पहुंचते पहुंचते उनका प्रकृति चित्रण पर्याप्त सुन्दर होने लगा, परन्तु उनका सर्वोत्तम रूप 'झरना', 'लहर' और 'कामायनी' में ही दृष्टिगत होता है।

प्रकृति के संश्लिष्ट चित्रण बिम्ब–ग्रहण के रूप में किये हैं। लहर', 'झरना' तथा 'कानन कुसुम' की प्रकृति विषयक कुछ कविताएं इस प्रकार हैं–

'किरण तुम क्यों बिखरी हो आज,
रंगी हो तुम किसके अनुराग।
स्वर्ण–सरसिज किंजल्क–समान
उड़ाती हो परमाणु पराग ।।' (झरना)

'कामायनी' के आशा सर्ग में प्रकृति के स्वतन्त्र रूप का वर्णन है। यह रूप आलम्बन–रूप कहलाता है–

उषा सुनहले तीर बरसती
जय लक्ष्मी जी उदित हुई।
स्वर्ण शालियों की कलमें थीं

दूर–दूर तक फैल रहीं,
अचल हिमालयन का शोभनतम
लता कलित शुचि सानु शरीर ।।

प्रसाद जी ने प्रकृति – चित्रण के साथ–साथ मनोभावों का अंकन करके प्रकृति को एक विकसित रूप में खड़ा किया है, उसमें जीवन की गति है तथा हृदय व मनोभावों की उदात्त उर्मियाँ हैं। उद्दीपन रूप में प्रकृति आनन्द के समय मानव के आनन्द को द्विगुणित करती हुई तथा दुःख के समय आसके दुःख को उद्दीप्त करती हुई दिखाई देती है। कामायनी के 'वासना' सर्ग में प्रकृति के मादक रूप का चित्रण करते हुए कहते हैं–

"विभव मतवाली प्रकृति का आचरण वहनील
मिलन का संगीत होने लगा था श्रीमंत ।
श्रद्धा के दुख से अभिभूत प्रकृति भी है–
"सन्ध्या नीलसरोरुह में जो श्याम पराग बिखरते थे
काल घाटियों के अंचल को वे धीरे से भरते थे
तृण गुल्मों से रोमांचित नग सुनते उसकी दुख गाथा
श्रद्धा की सूनी सांसो से मिलकर जो स्वर भरते थे।"
'लहर' में भी ऐसे उदाहरण है–
"मधुर माधवी सन्ध्या में
जब रागारूण रवि होता अस्त"

प्रसाद जी ने अपने भावों को स्पष्ट रूप में न बताकर प्रतीकों के माध्यम से भी व्यंजित किया है। 'लहर' कविता में लहर, आनन्द की भाव लहर का प्रतीक है। 'आँसू' की ये पंक्तियां दृष्टव्य हैं–

झंझा झकोर – गर्जन था
बिजली थी नीरद– माला
पाकर इस शून्य हृदय को
सबने आ डेरा डाला ।।

प्रकृति के उपमान रूप का चित्रण 'कामायनी' की निम्नलिखित पंक्तियों में कवि ने श्रद्धा के रूप–सौन्दर्य के माध्यम से किया है–

नील परिधान बीच सुकुमार
खिल रहा अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली फूल
मेघ–वन बीच गुलाबी रंग

प्रसाद जी ने अपने काव्य में प्रकृति के मानवीय भावों का आरोपण किया है। 'लहर' में कवि प्रसाद ने 'उषा' को 'पनिहारिन' के रूप मे चित्रित किया है। उस पर भारतीय नारीत्व का आरोपण कर उसे अपूर्व सौन्दर्यमयी चेतनशील रूप में प्रस्तुत किया है–

बीती विभावरी जागरी
अम्बर पनघट में डुबो रही
तारा घट ऊषा नागरी ।।

प्रकृति के रहस्यात्मक शक्ति की अभिव्यक्ति भी प्रसाद जी ने की है। कामायनी के 'आशा', सर्ग में प्रकृति का रहस्यात्मक रूप ही परिलक्षित होता है–

महानील इस परम व्योम में,
अन्तरिक्ष में ज्योतिर्मान,
ग्रह, नक्षत्र और विद्युत्कण
किसका करते–से संधान ?
छिप जाते हैं और निकलते
आकर्षण में खिंचे हुए,
तृण, वीरुध लहलहे हो रहे
किसके रस से सिंचे हुए ?

उनकी साहित्य साधना का आरम्भ ही प्रकृति की रमणीय गोद से हुआ है। श्री रामनाथ सुमन ने इस सन्दर्भ में लिखा है –''यह भी ध्यान देने की बात है कि 'प्रसाद' का प्रारम्भिक काव्य जो कुछ है, उसका विकास प्रकृति को लेकर ही हुआ है। परन्तु वह प्रकृति में निमग्न नहीं है, प्रकृति को लेकर उसने अपनी स्वतंत्र रचना कर ली है। प्रकृति उसका साधन है। इस प्रकृति में मानव जीवन का सुख–दुःख प्रकाशित और प्रतिबिम्बित है। वह मनुष्य की भांति वियोग में रोती है, जलती है, हँसती है और प्रियतम के आगमन पर नूतन परिधान धारण करती है।'' – कवि प्रसाद की काव्य साधना'' पृष्ठ संख्या–56
प्रमाद जी ने प्रकृति का मानव सापेक्ष चित्रांकन किया है। उनकी कोई भी कृति ऐसी नहीं है, जिसमें प्राकृतिक वर्णन का उदात्त रूप न मिले। प्रसाद जी ने प्रकृति के माध्यम से अपने अन्तर्मन की समस्त भावनाओं को शब्दों में व्यक्त किया है। छायावादी कवि होने के कारण प्रकृति से घनिष्ठ सम्बन्ध होना सहज है। प्रकृति के श्रृंगारमय, विलासमय तथा प्रकृति के भयंकरता के स्वरूप के भी दर्शन किये हैं।
सौम्य विद्रूप, श्रृंगारमय, वीभत्समय, जड़ एवं चैतन्यमय आदि अनेक चित्रों को अपने आप में उतारने के लिए सफल हुए हैं। 'कामायनी दिग्दर्शन में डॉ. केदारनाथ यतीन्द्र ने लिखा है– "प्रसाद जी प्रकृति के भव्य और भयंकर, निर्माणकारी और विनाशकारी, सूक्ष्म और विशाल सभी क्षेत्रों के कवि हैं। वस्तुतः प्रकृति प्रसाद साहित्य की निजी संस्कृति है, लगता है जैसे उनका सारा साहित्य इसी प्रकृति संस्कृति में ढलकर निकला हो।" कामायनी दिग्दर्शन– पृ० स० 184
कामायनी में प्रातः काल का वर्णन करते हुए कवि कहता है–

'उषा सुनहले तीर बरसती
जय लक्ष्मी सी उदित हुई
उधर पराजित कालरात्रि भी
जल में अन्तर्निहित हुई।' – कामायनी आशा सर्ग

आशा सर्ग में पृथ्वी का वर्णन करते हुए कवि इतना सजीव हो उठता है जिसकी कल्पना करना ही सहज नहीं है। प्रलय के पश्चात अपार सिन्धु–जल के मध्य से पृथ्वी दर्शन होने पर कवि कहता है–

"सिन्धु सेज पर घरा वधू अब
तनिक संकुचित बैठी सी
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में
मान किये तनिक ऐंठी सी"

प्रकृति के भयंकर चित्र उतारने में भी प्रसाद जी कुशल थे। चिंता सर्ग में प्रकृति की भयंकरता को व्यक्त करते हुए कहते हैं–

"उधर गरजती सिन्धु लहरियाँ
कुटिल काल के जालों–सी
चली आ रही फेन उगलती
फन फैलाये व्यालों सी।"

प्रसाद जी ने प्रकृति का चित्रण नाटकों भी किया है। कई नाटक तो प्रकृति–चित्रण से ही आरम्भ किये गये हैं। "एक घूंट" का आरम्भ भी इसी प्रकार हुआ है। ''अरुणाचल आश्रम का एक सघन कुंज, श्रीफल, वट, आम, कदंब और मौलश्री के बड़े–बड़े वृक्षों की झुरमुट में प्रभात की धूप घुसने की चेष्टा कर रही है। इधर समीर

के झौंके, पत्तियों और डालों को हिला हिलाकर जैसे किरणों के निर्विरोध प्रवेश में बाधा डाल रहे है————।''

प्रसाद जी की अनेक कहानियाँ भी प्रकृति–चित्रण से ही आरम्भ हुई है। कामायनी में मानव–मनोभावों और प्रकृति–सौन्दर्य के चित्र बड़े ही मनोरम शब्दों में प्रस्तुत हुए हैं। इसकी प्रथम पंक्ति ही प्रकृति–वैभव और मनु का चित्र प्रस्तुत कर देती है –

"हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर
बैठ शिला की शीतल छाह
एम पुरुष भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय–प्रवाह ।।''

प्रकृति और मानव का संबंध अत्यंत प्राचीन एवं अखण्ड है। प्रकृति मानव को उसके शैशवकाल से ही पालती है। सूर्योदय एवं सूर्यास्त के दृश्य, नीरव प्रशान्त रजनी की मधुरिमा, चन्द्र की ज्योतना, पुष्प का मधुर हास, कोकिल की कल–काकली एवं बसन्त की बहार किसके हृदय को आकृष्ट नहीं करती। ईश्वर रचित समस्त प्राणी प्राकृतिक सौंदर्य से हर्षान्वित होते हैं। मानव तो फिर ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति ही है। उसका प्राकृतिक सौन्दर्य से अभिभूत होकर, उस पर मुग्ध होना तुथा हर्ष लाभ करना स्वतः सिद्ध है।

मानव और प्रकृति के घनिष्ठ सम्बन्ध की अभिव्यक्ति धर्म, दर्शन, साहित्य और कला में युग–युगान्तरों से होती चली आयी है। वैदिक साहित्य में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जहाँ विभिन्न मन्त्रों के स्पष्टीकरण के लिए प्राकृतिक उपादानों का आश्रय ग्रहण किया गया है। वैदिक साहित्य में प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रसार अपने नैसर्गिक रूप में सर्वत्र दिखाई पड़ता है।

वैदिक देवता प्राकृतिक पदार्थों और शक्तियों के ही मानवीकृत रूप हैं। इन्द्र, वरुण, सविता, उषा और रात्रि आदि का चित्रण मात्र प्रकृति के स्थूल तत्वों की दृष्टि से ही वैदिक साहित्य में नहीं हुआ है, अपितु वे जीवन की अनुभूतियों से ओत–प्रोत हैं। उनमें हमें आत्मीयता का अनुभव भी होता है।

ऋग्वेद में स्तुत उषा का चित्र प्रस्तुत करते हुए ऋषि कहते हैं–

''एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना समना पुरस्तात्
ऋतस्य पन्थामन्वेति साधुं प्रजानतीव न दिशो मिनाति।।"–
ऋग्वेद 1/124/3

अर्थात यह आकाश की पुत्री, आलोकवसना उषा प्रत्यक्ष उदित हुई है। यह ऋत (नियम) का अनुसरण करती हुई सब दिशाओं का ज्ञान रखती है।

कामायनी या साध्य वैदिक आनन्दवाद होने के कारण उसका मूल आधार अभेद–भावना है। कामायनी के कवि प्रसाद भी जड़ और चेतन का भेद नहीं मानते हैं। उनकी दृष्टि में जड़ प्रकृति और चेतन प्रकृति में कोई भेद नहीं है –

'' नीचे जल था, ऊपर हिम था, एक तरल था एक सघन
एक तत्व की ही प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन ।।''
–कामायनी

''प्रसाद के लिए अन्तः प्रकृति और बाह्य प्रकृति तत्वतः एक ही है। इन दोनों के बाह्य स्वरूपों में ही थोड़ा बहुत अन्तर है। यदि एक कुछ अधिक सघन है तो दूसरी कुछ तरल अथवा द्रवरूप है। जल का सघन रूप ही हिम है और हिम का द्रव रूप ही जल है। इन दोनों के मूलरूप को भारतीय दर्शन में प्रधान कहा है, जिसकी ओर प्रसाद जी ने भी प्रधानता' शब्द के द्वारा संकेत कर दिया है।'' –

डॉ. फतेह सिंह कामायनी सौन्दर्य

इस प्रधान की ही दूसकी संज्ञा 'मूल शक्ति' है। इसके भी दो स्वरूप हैं। व्यक्त और अव्यक्त अपनी व्यक्त दशा में यही शक्ति बाह्य जगत में कोकिल की काकली, फूलों की हॅसी, सरिता के कल–कल, शिशुओं के कोलाहल, लता के पुष्पों और धरा की गन्ध आदि तरल रूपों में विद्यमान रहती है। अपनी अव्यक्त दशा में यह 'एकान्त' में अन्तर्निहित राती है –

''वे फूल और वह हॅसी रही वह सौरभ, वह निःश्वास घना
वह कलरव, वह सङ्गीत अरे, वह कोलाहल एकान्त बना" –
कामायनी

अपने इस एकांत को त्याग कर वह अपने परमाणुओं से इस नानारूप जगत निर्माण करती है। 'कामायनी' में इस प्रक्रिया का भी चित्रण प्रासाद जी ने किया है–

"वह मूल शक्ति उठ खड़ी हुई अपने आलस का त्याग किये
परमाणु बाल सब दौड़ पड़े, जिसका सुन्दर अनुराग लिये
———।"
प्रत्येक नाश विश्लेषण भी संश्लिष्ट हुए बन सृष्टि रही
ऋतुपति के घर कुसुमोत्सव था, मादक मरन्द की वृष्टि रही।।
बाह्य जगत की इस अनेक रूपता में यह मूल शक्ति वास्तव में चित ब्रह्म की 'चिति' शक्ति है–
"अपने दुख सुख से पुलकित यह मूर्त विश्व सचराचर
चिति का विराट वपु मंङ्गल वह सत्य सतत चिर सुन्दर ।''
इसी से उस शक्ति (प्रकृति) का शक्तिमान (पुरुष) निरन्तर तरंगायित रहता है –
''चिर मिलित प्रकृति से पुलकित वह चेतन पुरुष पुरातन
निज शक्ति तरंङ्गायित था आनन्द–अंबु–निधि शोभन।''

प्रसाद जी ने प्रकृति को परम्परागत भारतीय मान्यता के अनुरूप ही 'शक्ति' अथवा 'आदि पुरुष की सहचरी' के रूप में देखा और प्रस्तुत किया है।

प्रकृति का उग्ररूप

कामायनी के प्रारम्भ में ही प्रकृति के उग्ररूप का चित्रण हमे मिलता है। जल–प्लावन का प्रसंग, जिसमें कवि ने प्रकृति के भयावह एवं क्रूर रूप का चित्रण किया, प्रलय, नीर बरसना धूम्र के समान बादलों का उठना, सघन आकाश में भयानक प्रकम्पन, अंधकार, उलकाओं का गिरना, भीषण रव से पृथ्वी का बार–बार कॉप जाना, सिन्धु की लहरों का गर्जन आदि के द्वारा कवि प्रकृति के भयावह रूपों को ही दर्शाता है। इसी प्रकार 'स्वप्न' सर्ग में भी प्रकृति के रुद्र रूप का चित्रण किया गया है।

'कामायनी' का आरम्भ प्रकृति की क्रोड़ से होता है तथा पर्यवसान प्रकृति की भूमिका में, प्रारम्भ में प्रकृति का रौद्र एवं भीषण रूप सामने आता है और अन्त में प्रकृति अपनी शन्तिदायिनी छाया में विश्राम देती हुई अपनी महिमा को चरितार्थ करती है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के शब्दों मे यही कहना है– 'वे मानवीय इंगितों पर प्रकृति को साज सजाकर नाच नचा देते हैं।''

वैदिक साहित्य और कामायनी में कुछ समान प्रकृति चित्र भी देखने को मिलते हैं– हिमालय, उषा, सन्ध्या, रात्रि आदि।

इस प्रकार नूतन अभिव्यंजना पद्धति से आकुल मन को अभिव्यक्ति देने वाले छायावादी कवि प्रसाद जी ने कामायनी के प्रकृति चित्रण में एक नव्य दृष्टि प्रदान की है। कामायनी में जड़ और चेतन प्रकृति में अभेद की स्थापना भी की गई है। प्रकृति के दोनों ही रूपों को स्वीकार किया गया है दोनों ही स्थलों पर गत्यात्मकता का गुण भी विद्यमान है।

संदर्भ ग्रंथ

1. कवि प्रसाद की काव्य साधना – पृष्ठ – 56
2. कामायनी दिग्दर्शन – प्र०सं० – 184
3. कामायनी
4. ऋग्वेद – 1/124/3
5. कामायनी सौंदर्य – डॉ० फतेह सिंह
6. लहर और झरना – प्रसाद
7. कामायनी पर्यालोचन – लालधर त्रिपाठी